ISSN : 2583-2948

सिसकती इंसानियत

डॉ. ममता पंत
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा उत्तराखंड
Mail id - mamtapanth.panth@gmail.com
Mo no. 8650181642/9897593253

इंसानियत

जाने क्या हो गया इसे

मजबूर है

बैसाखियों पर चलने को

टेक दिए हैं घुटने

सामने हैवानियत के

होनी थी जहां

प्रेम की फुलवारी

वहां भरे हैं जंगल

नफ़रत के

कौन समझाए इन्हें

और कैसे

कि इंसानियत की

न कोई जाति है

औ' न धर्म ही

है तो बस

एक पहचान

जो उसकी निजी है

जहां अंकुरित होते हैं

बीज प्रेम के

ISSN : 2583-2948

फलता है बस प्रेम

फूलती है फुलवारी

पर आज तो इंसानियत

सिसक रही है...!

'अप्रतिम प्रेम'

प्रेम !

खुद को खोलना ही नहीं

अपितु छिपाना भी है

ताकि बचा सकें उन्हें

अपने खतरों से

मुक्त रख सकें

अपने जंजालों से

इसी तरह

छुपाती हैं बहुत कुछ

ताकि रख सकें

प्रेम को स्वार्थ से दूर

कर सकें उन्हें

उनसे भी ज्यादा प्रेम

ऐसी अप्रतिम क्षमता

रखती हैं वे...

ISSN : 2583-2948

'प्रेम में...'

मानवता की अनमोल धरोहर

जिससे टिकी रही

जीव-सभ्यता

और तुम !

प्रेम में भी

अस्तित्व को अपने

टुकड़ा-टुकड़ा करने की बात करते हो

और मैं उसे सहेजने की...

जिसने जोड़ा है सम्पूर्ण विश्व को

उसे बचाने हेतु

टकरा जाती हूं

विश्व की तमाम परम्पराओं से...!